936

तीसरा आदमी

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

तीसरा आदमी

कथावस्तु -

'तीसरा आदमी' कमलेश्वरजी का बेहद चर्चित लघु-उपन्यास रहा है। पति-पत्नी के संबंधों को लेकर लिखा गया कमलेश्वरजी का यह लघु-उपन्यास अपनी विशेषताओं लिये हुये है। जबसे इस दुनिया की पैदाइश हुई है, हमेशा स्त्री और पुरुष के बीच अथवा पति-पत्नी के बीच कोई तीसरा आदमी आता ही रहता है, जिससे जीवन तल्ख हो जाता है। 'तीसरा आदमी' की कहानी कुछ ऐसी है। मैं और चित्रा दोनों पति-पत्नी है। सुमन्त मैं का दूर-दराज का मामी है। विवाह के पहले दिन से ही सुमन्त

मैं और चित्रा के बीच आता है। और शक की अेक दीवार खड़ी करता है। दरअसल सुमन्त देखने-भालने में खूबसूरत ही था। लड़कियों की निगाहें बार बार अुसकी ओर लग जाती थीं। चित्रा भी अुसकी खूबसूरती से प्रभावित हो गयी। विवाह के बाद कुछ ही दिनों में मैं और चित्रा दिल्ली जाते है - सुमन्त के पास। मैं अच्छी नौकरी की तलाश करता रहता है, मगर अुसकी पहली नौकरी रेडिओ अेनाअुन्सर की थी, सो अुसमें ही अुसे प्रमोशन मिल जाता है। दिल्ली में सुमन्त का मकान बिलकुल छोटा ही था। तीन आदमियों के लिअे भी अुसमें जगह नहीं थी। फिरभी ये तीनों कैसे कैसे तो अुसमें ज़िन्दगी गुजारने लगे थे। सुमन्त दिल्ली के अेक प्रेस में काम करता था। आगे चलकर सुमन्त ने चित्रा को प्रूफ रीडिंग का काम भी सिखाया। मैं जब घर से बाहर रहता तो सिर्फ़ चित्रा और सुमन्त दोनों ही मकान में रहा करते। दिन ब दिन सुमन्त चित्रा की ओर आकर्षित होता जा रहा था और चित्रा भी सुमन्त की ओर खींची जा रही थी। चित्रा सुमन्त के साथ जितनी खुलकर बातें करती थीं अुतनी मैं के साथ नहीं। फलस्वरूप मैं के दिल में शक धीरे धीरे पक्का होता चला। अेक रोज मैं गंगातट के जीवन की डाक्यूमेंटरी के लिअे अन्य तीन-चार लोगों के साथ अेक हफ्ते के लिअे बाहर चला जाता है। जाते हुअे अुसके दिल में बहुतसी बातें अुमडकर आ रही थीं और शक बढता जा रहा था। और अेक चित्रा थी कि वह अपनी निडरता का अहसास मैं को दिला रही थी। आखिर मैं अेक हफ्ते के लिअे बाहर चला ही गया। अिन सात दिनों में चित्रा और सुमन्त के बीच तमाम सारी बातें घटित हो गयीं। वैसे सुमन्तने भी अेक बहाना बनाते हुअे मैं से कह दिया कि वह प्रेस के काम के सिलसिले में आगरा जा रहा है। मैं के चले जाने के बाद चित्रा और सुमन्त बिलकुल आज़ाद हो गये थे। वे दोनों

तन - मन से अेक दूसरे के और करीब आ गये थे। अेक हफ्ते के बाद जब मैं लौटा तो सुमन्त और चित्रा दोनों भी मैं को बना रहे थे कि जैसे वे दोनों अेक ही मकान में बिलकुल अलग रहे हों। मगर मैं ने दोनों की बातों को बखूबी सुन कर यह जान लिया था कि अुसने जो सोचा था, वही सच निकला। दिन ब दिन चित्रा का रवैया भी बदलता गया। मैं की गैरमौजूदगी में दोनों - सुमन्त और चित्रा जी भरकर बातें किया करते थे। अेक रोज मैं जब ड्यूटी से लौटा तो चित्रा घर पर नहीं थी। वक्त काटने के लिअे दिल्ली रेल स्टेशन की ओर मैं चला गया था। अचानक अुसने जो देखा, वह कुछ अजीब ही था। अुसे यकीन नहीं आ रहा था कि क्या अैसा हो सकता है २..... रेल स्टेशन की सामनेवाली सीढ़ियोंपर से चित्रा और १ दोनों नीचे चले आ रहे थे। बस फिर क्या १ मैं का शक अेकदम पक्का हो गया। वह घटना अुसके लिअे असह्य थी, फिरभी अुसने संयम से काम लिया। अुन्हें देखते ही मैं टेलीफोन-बूथ में घुस गया। मैं ने देखा कि सुमन्तने चित्रा के कन्धेपर हाथ रख दिया था और चित्रा सुमन्त के साथ खुलकर हँसते हुअे बातें कर रही थी। कुछ दिन योंही बीत गअे। मैं के लिअे सुमन्त के मकान में अेक पल भी ठहरना मुश्किल था। रफ्ता रफ्ता चित्रा और मैं के बीच दूरियाँ हमेशा पैदा हो गयीं।.....

आगे चलकर चित्रा सुमन्त से गर्भवती भी रही। मैं जानता था कि सुमन्त का ही खून चित्रा के बदन में बह रहा है। मगर अुसने अिस मामले में किसी से कुछ नहीं कहा। आखिर मैं चित्रा को बिना बताअे हुअे कुछ दिन के लिअे भोपाल चला गया जिससे दिल का बोझ जरा कम हो। मानसिक अुलझन से छुटकारा मिले। अब दिल्ली में सिर्फ चित्रा और सुमन्त दोनों ही

रहने लगे थे। अिस बीच मैं ने चित्रा को अेक चिठ्ठी भी नहीं लिखी। मां-बाप के पूछने पर मैंने बताया कि चित्रा को प्रसव के लिअे मायके भेज दिया है। फिर कुछ दिनों बाद मैं के नाम अेक चिठ्ठी चित्रा के पिताजी ने भेज दी थी और पुत्र होने की सूचना दी थी। बाकी चित्रा के बारे में कुछ भी नहीं लिखा था। मैं और कुछ दिन अपनी छुट्टियाँ बढ़ाना चाहता था पर अचानक आकाशवाणी की ओर से मैं को जल्द ही दिल्ली बुलाया गया। दिल्ली में कुछ दिन रहने के बाद रफ्ता रफ्ता मैं का शक कम होता जा रहा था। दिल्ली में मैं सुमन्त के बदले अपने दोस्त के मकान में रहने लगा था। आखिर अेक रोज मैंने चित्रा को मनवा लिया। दोनों अब अेक नयी ज़िन्दगी शुरू करना चाहते थे। गुड्डू धीरे धीरे बढने लगा था। प्रसव के बाद चित्रा में और भी अधिक निखार आया था। अुसका बदन और भी अधिक मोहक बना हुआ था। अेक तरह से प्रसव के बाद चित्रा बेहद अच्छी लग रही थी। आगे चलकर गुड्डू को डिप्थेरिया की बीमारी लग गयी और अिलाज के लिअे अुसको हॉस्पीटल में रखा गया। मगर यह सारा काम स्वयं सुमन्त ने ही किया क्यों कि मैं की दिल्ली में और किसीसे जान पहचान नहीं थी। और दूसरी ओर चित्रा जब मैं की आँखो में झाकती, तो अुसे अुसकी आँखो में सिर्फ मायूसी के सिवा और कुछ नजर नहीं आता था। हॉस्पिटल में भी चित्रा सुमन्तसेही ज्यादा बातें किया करती थीं। और सुमन्त बार बार डॉक्टर से सलाह लेता रहता था। मैं सिर्फ हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप बैठा करता। अिन सभी बातों को देखकर मैं के दिल में शक और भी पक्का होता गया।

हॉस्पिटल से लौटने के बाद चित्रा और मैं बिलकुल खुशी के साथ

रहने लगे। जब कभी मैं गुड्डू की आँखों में झांकता तो, अुन मायूस आँखों को देखकर पलभर के लिअे मैं का सारा शक घूल जाता। चित्रा और मैं दोनों अब करीब आने लगे। चित्रा फिरसे गर्भवती रही। मैं का बचा हुआ सामान स्कूटर पर डालकर सुमन्त मैं के घर आया, तो अुसने फौरन गुड्डू को अुठा लिया, प्यार से अुसको चूमा और अुसको अेक खिलौना भी दे दिया। अिस बात से मैं का शक फ़िरसे जाग अुठा और आखिर गुस्से से जल भुनकर मैं ने सुमन्त को बहुत सी अुल्टी सीधी बातें सुनायीं और कह दिया..... "अगर चित्रा में कोअी कमजोरी थी तो, अुसका तुम्हें नाज़ायज़ फ़ायदा नहीं अुठाना चाहिअे था"। मैं ने अुस वक्त अपने दिल की सारी भड़ास निकाली। अुसके बाद फिर मैं , चित्रा और सुमन्त की ज़िन्दगी से अलग रहने लगा। सुमन्त ने भी अेक तीसरी अेक कमरा लिया था। अिधर चित्राने अेक लड़की को भी जनम दिया। प्रसव का सारा अिंतजाम खुद सुमन्त ने ही किया था। कुछ दिन बीत जाने पर चित्राने दिल्ली के अेक स्कूल में नौकरी स्वीकार कर ली। लिव्ह वेकेन्सी पर अुसको वहाँ नियुक्त किया गया था और दूसरे ही साल अुसकी नौकरी पक्की भी हो गयी। क्यों कि पहले की टीचरने अपना अिस्तिफ़ा दे दिया था। चित्रा वहीं से अपना तबादला करने के लिअे भी राजी नहीं थी। जब जब भी मैं चित्रा की आँखो में झांकता तो लगता जैसे दो नहीं चार आँखे अुसको ताक रही है, दो नहीं चार ओंठ अुसको प्यार कर रहे हैं, और चार बाहें अुसको कस रही है। हरदम अेक तीसरी छाया मंडराती रहती। मैं का अब दिल्ली में रहना बहुत ही दुश्वार था क्योंकि वह तीसरी छाया मैं को भीतर से खोखली बना रही थी और आखिर मैं ने चित्रा से कह दिया कि अुसने पटना ट्रान्सफर कर लिया है। मगर चित्रा

दिल्ली छोड़ने के लिये तैयार नहीं हुआ। और आखिर मैं ने दिल्ली छोड़ ही दी और वह पटना चला आया। मगर पटना आकर भी वह और भी बेचारा हो गया था। यहाँ आकर भी वह राहत की साँस नहीं ले पाया। चित्रा की याद उसको सताये जा रही थी। कुछ दिनों के बादही पता चला कि सुमन्त ने किसी होटल के कमरे में आत्महत्या कर ली थी। शायद किसी तीसरे आदमी के कारण - शायद वह मैं। पुलिसने चित्रा को कितना परेशान किया होगा कुछ पता नहीं।

अेक बार तो लगा था कि शायद अब चित्रा मैं को याद करे। शायद उसके दिल में वही पुरानी भावनाअें फिर उभरें और वह हारी हुअी आकर मैं के पास खड़ी हो जाअे। लेकिन अैसा कुछ हुआ नहीं। और शायद कुछ होता भी नहीं है। हो भी क्या सकता है ? अब बाकी ही क्या बचा है ? बच्चे? मैं जानता हूँ चित्रा उन्हें नहीं देगी। और अब मैं चित्रा के साथ उस तरह रह भी नहीं सकता। यह मैं की मजबूरी है। मैं को उस छाया ने मजबूर कर रखा है। अब मैं की दुनिया में मैं है और अेक वह छाया है जो मैं को अब भी चैन से बैठने नहीं देती। हर वक्त अेक तीसरी छाया मंडराती रहती है। "अैसा लगता है कि हर मैं और हर चित्रा के बीच वह छाया खड़ी है.....जब भी कोअी भी, किसी भी चित्रा की आँखों मे झाँकने की कोशिश करता है तो लगता है कि जैसे दो नहीं चार आँखे झाँक रही हैं, चार बाहें उस चित्रा को कस रही है - चार होंठ उसे प्यार कर रहें है।"[२]

पात्र और उनका चरित्र चित्रण

कमलेश्वरजी के 'तीसरा आदमी' इस लघु-उपन्यास में प्रमुख पात्र तीन हैं - मैं, चित्रा और सुमन्त। इन पात्रों की एक खास विशेषता है कि यहाँ उनका मानसिक संघर्ष प्रस्तुत किया गया है। खासकर मैं नामक जो पात्र है, वह शक्की है। वह भीतर से टूटा हुआ महसूस करता है। हर समय उसके दिलमें तीसरी छाया मंडराती रहती है। कमलेश्वरजी ने इन पात्रों का मानसिक व्दंव्द यहाँ प्रस्तुत किया है।

मैं - इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो चित्रा का पति भी है। मै एक रेडियो अेनाउन्सर है। उसके घर में उसके मां-बाप तथा भाभी-बहन भी हैं। वह भोपाल का रहनेवाला है। अेक रोज लखनऊ की चित्रा नामक लडकी से उसकी शादी हो जाती है। शादी के कुछ दिनों बाद ही अपनी पत्नी के बारे में वह शक करने लगता है। उसका दूर दराज का भाअी सुमन्त मैं और चित्रा के बीच आ जाता है। और मैं शक की आँधी में कसमसाने लगता है। जैसे - ''रातों में.....जब मैं चित्रा को अपनी बाहों में लेता तो अेक अजनबी गंध फूटती थी। वह छाया कहीं से मंडराती हुअी कहीं से भी आती थी और मुझसे पहले उसकी बाहों को पकड़ लेती थी.....जब मैं उसकी बाहों पर हाथ रखता तो वहाँ दो हाथ पहले से मौजूद होते थे। वह छाया मुझे चित्रा के पास पहुँचने से रोकती थी.... चित्रा की आँखो में जब मैं झाँकता था, तो वहाँ चार आँखे झाँकती होती थीं....चार बाहें उसे कस रही थीं.....चार होंठ उसे प्यार कर रहे होते थे''[२]।

दरअसल मैं चित्रा पति होने के बावजूद भी मजबूर है। यद्यपि चित्रा सुमन्त के साथ यौन संबंध रखती, तो भी वह फ़ौरन कुछ कह नहीं पाता। यहाँ तक की सुमन्तसे चित्रा गर्भवती रहने पर भी वह चित्रा को दोष नहीं देता। मैं के दिल में बच्चे के लिऐ प्यार है। यही वजह है कि वह गुड्डू को देखकर सबकुछ भूल जाता है। मगर जब सहना दुश्वार हो जाता है तो सुमन्त से उल्टी-सीधी बातें करने लगता है। जैसे - "तुम्हें शरम आनी चाहिऐ थी यह सब करते हुऐ। तुम मेरे भाऊी थे....अगर चित्रा में कोऊी कमजोरी पैदा हो ही गऊी थी तो, तुम्हें उसका नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिऐ था। तुमने मेरा विश्वास तोड़ा है....मैं ने यह कभी नहीं सोचा था कि तुम मेरे लिऐ आस्तीन के साँप साबित होंगे।"[४].....

चित्रा - तीसरा आदमी का ऐक नारी पात्र है। वह मैं की पत्नी है। चित्रा पढी-लिखी और बेहद खूबसूरत युवती है। दरअसल वह लखनऊ की रहनेवाली है। विवाह के बाद लखनऊ से ट्रेन से लौटते हुऐ सुमन्त मैं की अपेक्षा चित्रा के और करीब आ जाता है। चित्रा सुमन्त की खूबसूरती-से तो प्रभावित हो जाती है और रफ्ता रफ्ता दोनों के सम्बन्ध गहराऊी पा लेते हैं। अपने पति के चित्रा दिल्ली जाती है। सुमन्त के पास। ऊिस छोटे से कमरे में तीनों रहने लगते हैं। मैं की गैरमौजूदगी का दोनों भी फायदा ऊठाते हैं। चित्रा सुमन्त को मन के साथ तन भी दे बैठती है। अंजाम यह कि सुमन्त का खून चित्रा के बदन में बढते लगता है। वह ऐक बच्चे को (गुड्डू) जनम देती है। चित्रा का अपने पति की बनिस्बत सुमन्त की ओर ज्यादा रुझान है। आगे चलकर वह दिल्ली के ऐक स्कूल में नौकरी करने लगती है। दिल्ली से वह अपना ट्रान्सफर भी नहीं कराना चाहती। मैं के पटना चले जाने पर

चित्रा सुमन्त के साथ बिलकुल स्वतंत्र रूपसे रहकर अपना जीवन -यापन करती है।

सुमन्त - सुमन्त दिल्ली का रहनेवाला है। देखने-भालने में वह बहुत ही खूबसूरत है। दिल्ली के अेक प्रेस में काम करता है। मै का वह दूर दराज का माअी लगता है। मैं की शादी में वह खुशी से शरीक हो जाता है। मगर शादी के पहले रोज से ही वह चित्रा की निगाहों का केन्द्रबिन्दु बन जाता है। वैसे सुमन्त के चरित्र की कअी विशेषताअें अुभरकर सामने आ जाती हैं। दरअसल सुमन्त बड़ा ही मिलनसार युवक है। जब मै अपने दोस्तों के साथ ताश खेलने के लिअे रेल के तीसरे दर्जे के डिब्बे में, चित्रा को अकेली छोड़कर जाता है, तब सुमन्त ही अुसकी देखभाल करता है। चित्रा को प्यास लगने पर पानी का गिलास फौरन अुसके हाथ में थमा देता है। चित्रा जब अपने पति के साथ दिल्ली आती है, तब वह अुसको प्रूफरीडिंग का काम सिखाता है। मै जब 'गंगातट जीवन' की डाक्यूमेंटरी के लिअे अेक हफ्ते के दौरान बाहर चला जाता है, तो चित्रा को साथ देता है। यहाँ दोनों - तन - मनसे करीब आ जाते है। चित्रा सुमन्त से गर्भवती रहती है। पोल खुलने पर मै सुमन्त को बहुत कुछ सुनाता है और आखिर - अेक होटल के कमरे में आत्महत्या कर लेता है। मगर सुमन्त आत्महत्या क्यों करता हैं ? अिसका अुपन्यासकारने कहीं जिक्र नहीं किया और नही संकेत भी।

कथोपकथन - 'तीसरा आदमी' अुपन्यास के कथोपकथन बिलकुल स्वाभाविक बन पड़े है। अुनमें कहीं भी दुसहता दृष्टिगोचर नहीं होती। अेक अेक वार्तालाप अेक चित्र प्रस्तुत करता हुआ कथावस्तु को आगे बढ़ाते हुअे

चरित्र चित्रण पर प्रकाश डालता रहता है। ये कथोपकथन कहीं कहीं अेकदम छोटे छोटे बन पड़े हैं तो कहीं कहीं अेकदम से लम्बे - चौड़े। निम्नांकित कथोपकथन से - (मै और चित्रा का) शक की अेक हल्कीसी छाया मंड़राती हुअी नजर आती है। जैसे -

''सुमन्त कब आयेगा ?'' मै ने पूछा था।
''क्यों ?'' .....
''अैसे ही पूछा रहा हूँ।''
''क्या पता।''
''कुछ कहकर नहीं गया है।''
''नहीं।''
''मेरे खयाल से जल्दी ही लौटेगा।''
''तो फिर आज भी अुसे बाहर ही सुलाया जाय।''
''नहीं, आज वह जरूर यहीं सोअेगा - कहेगा तो मैं जबरदस्ती यहीं सुलाअूँगी।''
''वह समझदार है।''
''और तुम।''
''मेरी अुसकी जरूरतों में फर्क है।''
''तुम्हीं सोच लो।''
''अब हमारे तुम्हारे संबंधों का कोअी अर्थ नहीं रह गया हैं।''
''यह तो तुम्हीं सोच सकते हो।''
''मेरे सोचने की अिसमें क्या बात है।''
''तो और कौन सोचेगा।''

'तीसरा आदमी' के संवादों में कहीं कहीं नाटकीयता भी दिखाई देती है। मैं के कथोपकथन इस बात के परिचायक हैं। जैसे -

''यह नहीं होगा''....।
''क्यों''.....
''बस.....नहीं होगा''।
''और जो मेरे साथ हुआ है।''
''उसके खुद तुम जिम्मेदार हो।''
''इसीलिये वह भाग गया है।''
''भागते तो तुम रहे हो''।

संक्षेप में अगर कहना चाहें तो 'तीसरा आदमी' के कथोपकथन अपनी विशेषताओं लिये हुये हैं। ये कथोपकथन पात्रों के चरित्रों पर प्रकाश डालने में समर्थ हैं तो दूसरी ओर कथावस्तु को विकसित करने में सहयोग प्रदान करते हैं। ये कथोपकथन सीधे - सरल, स्वाभाविक और स्पष्ट तथा प्रभावशाली बन पडे हैं। पात्रों की मनःस्थिती को पाठकों के सामने रखने में सिध्दहस्त है। ''शर्म नहीं आती तुम्हे''.....कहते हुये वह खुद जैसे शर्म से गड़ गयी थी।

चित्रा की घबराई हुई हालत का पता निम्नांकित कथोपकथनों से लग जाता है। जैसे -

''क्यों क्या बात है ? इस वक्त....ड्यूटी खत्म हो गयी ?''
''कुछ नहीं....ऐसे ही।''
''कोई बात तो होगी।''
''नहीं।''
''आराम कर लो।''
''यही सोच रहा हूँ।''
''चाय तो नहीं पीओगे।''

''नहीं।''

पोल खुलने पर मैं दिल्ली में अेक पल भी ठहरना नहीं चाहता। मैं अपने पिताजी से सारी बातें कह देना चाहता है लेकिन अुससे भी क्या हासिल होना था ? अुन्हें अिस बुढ़ापे में यह सब बर्दाश्त नहीं हो पाअेगा। मैं कितना मजबूर बन गया है, अिसका परिचय हमें अुसके निम्नांकित कथोपकथन से मालूम हो जाता है। जैसे -

''मैं यहाँ से ट्रान्सफर करा रहा हूँ।''

''क्यों ?''

''यहाँ की ज़िन्दगी मेरे वश की नहीं।''

''क्या हुआ ?''

वातावरण -

'तीसरा आदमी' में निम्नवर्ग के पति-पत्नी और अुनके बीच आनेवाले 'तीसरे आदमी' का यथार्थ चित्र मिल जाता है। अिस लघु-अुपन्यास में कमलेश्वरजी ने दिल्ली जैसे महानगरों मे, छोटे छोटे मकानों में रहनेवाले पति-पत्नी और अुनकी समस्याओं को अुजागर किया है। अिस वातावरण की पृष्ठभूमि पर मैं चित्रा और सुमन्त को पेश किया गया है। दिल्ली की अेक शाम का यह वर्णन कितना यथार्थ और प्रभावशाली बन पड़ा है। जैसे -

''शाम होते ही हमारी गली में अुदासी भरने लगती थी। अेक अेक कमरों में रहनेवाली गृहस्थियाँ बाहर गली में निकल आती थीं। गली भर में पत्थर के कोयलों की अंगीठियाँ सुलने लगती थीं। नाली के पास गली की जमीन साफ करके पानी छिड़क लिया जाता था और खाटे बिछा ली जाती थीं।

अुनपर बैठी बैठी औरतें सब्जियाँ काटती रहती या कोअी और काम करती रहतीं। सामने की दीवारों पर लगे हुअे नलियों के पाअिप बड़ी बड़ी छिपकलियों की तरह चिपके लगते थे और मेरा मन गिज़गिज़ाहट से भर अुठता। अिन कुछ ही दिनों में हमारे सारे कपड़ों का रंग और बू अेक खास किस्म की हो गअी थी। तौलियों में अजीबसी महक समा गअी थी और बिस्तर सड़े हुअे अनाज की तरह महकने लगे थे''[५]।

दिल्ली में रहनेवाले सुमन्त के मकान का जो वर्णन कमलेश्वरजी ने प्रस्तुत किया है, अुसमें अेक ओर यथार्थता है तो दूसरी ओर रूमानियत भी भरी हुअी है। अुदा -

''सीली हुअी दीवारें.....सड़े अनाज़ की तरह महकता हुआ बिस्तर....कोने से आती हुअी राशन की गंध...मैले कपड़ों की मसक और अुनमें से फूटती हुअी चित्रा के बालों में पड़े तेल और बँधी हुअी वेणी की बू। अुसका तन पसीजने लगता और मिली जुली गंध के ज्वार में हम डूब जाते... अुसका पसीजता शरीर मेरी बाहों में घुलता होता, पसीने का अेक भभका आता....हमारी दीवार से लगा हुआ टूटा पाअिप खरखराता और अुपर की मंजिल से बहाअी हुअी जूठन का लोंदा भद्द से नाली में गिरता और मूली या खरबूजों के सड़ते बीज की महक का झोंका आता....गली में कोअी जोर से बात करता तो हम सहम जाते, जैसे वह हमें अिस हालात में देखकर टोक रहा हो। दरवाजे के पास आती और फिर दूर जाती कदमों की आहट हमें सर्द कर जाती, फिर जैसे बदन जलने लगते और मैं चित्रा के होठों पर होंठ रख देता....हल्कासा प्याज महकता और अुसी में वेणी के फूलों की

गंध समा जाती। दोनों बाँहों के बीच सूखे हुअे पसीने और सुबह लगाअे हुअे पाअुडर की चिकनाहट का अेहसास होता....अुसका रोम रोम अुमर आता....जाँघों से अुपर और जाँघों पर जैसे कोमल काँटे अुमर आते और फिर सब महकें घुल - मिलकर जिन्दगी की अेक अजीब महक में समा जातीं। चारों ओर जैसे सितारे फूटने लगते....शरीर चटखने लगते। साँसें गुंथ जातीं और हाथों से पके हुअे चावल की गंध फूटने लगती। शरीर अुस गंध में नहा जाता और हम पसीने से लथपथ अपने बंधनों को ढीला करने लगते।[६]

कमलेश्वरजी ने दिल्ली की शोर भरी जिन्दगी का बखूबी के साथ वर्णन किया है। अुदा-...... "हम सड़क के किनारे [redacted] किनारे टहलते रहते और दीवार के अुस पार कूड़े की रेलगाडियाँ भर-भरकर घूटती रहतीं। डिब्बों में कूड़ा भरते हुअे जमादारों की टोलियों की मनमनाहट, लड़ते हुअे कुत्तों का शोर और बेलचों, तसलों, पल्लों और फावड़ों की आवाजें आती रहतीं। सैकड़ों टन कूड़े की बदबू भी अुस वक्त चित्रा के जूड़े में महकते बेला के फूलों में दब जाती और हम चुहल करते हुअे अुसी सडक पर चहलकदमी करते रहते।....नअी दिल्ली स्टेशन से अिंजनों की सीटियाँ सुनाअी पड़तीं और कुछ देर बाद अड्डे की तरफ लौटते हुअे तांगों की आहट आती। आधी रात में कूड़े के ट्रक आते और शोर मचाते हुअे और 'डम्प प्लेट फार्म' की ओर चले जाते।[७] ......

भाषा शैली -

दरअसल कमलेश्वरजी की भाषा में कलात्मक निखार और चित्रात्मकता

भी है। अुनके लघु-अुपन्यासों की भाषा में आत्मीय बोध दृष्टिगोचर होता है। अुनकी भाषा सीधी, सरल और प्रभाव अुत्पन्न करनेवाली है। 'तीसरा आदमी' की भाषा में यह सारे गुण पाये जाते हैं। अिस लघु-अुपन्यास के वाक्य छोटे छोटे तथा अत्यन्त प्रभावपूर्ण बन पड़े हैं। भाषा पर कमलेश्वरजी का जबरदस्त अधिकार है। सांकेतिक अभिव्यक्ति 'तीसरा आदमी' की खास विशेषता है। वैसे कमलेश्वरजी ने अपने सभी अुपन्यासों में अिसका प्रयोग किया है।

...... 'तीसरा आदमी' में कमलेश्वर की भाषा अितनी अधिक प्रभावशाली अेवं समर्थ है कि वह कम से कम शब्दों में समूची स्थिति को व्यक्त कर देती है और अुपन्यास की मूल संवेदना को भी प्रकट कर देती है। अुसमें 'छाया' के प्रतीक का अुपकरण यह स्पष्ट भी कर देता है।''[८]

'तीसरा आदमी' अुपन्यास की भाषा में अंग्रेजी अेवं अुर्दू शब्दों का यथावत प्रयोग हुअे हैं। भाषा में अेक तरह की सम्प्रेषणीयता भी है। अुसमें चित्रात्मकता के दर्शन भी हो जाते हैं। अुदा - ''..... मैं नअी दिल्ली स्टेशन की सीढियों के पास पहुँचनेवाला था कि अूपर से सुमन्त और चित्रा मुझे आते दिखाअी दिअे। मेरी सांस जहाँ की तहाँ अटकी रह गअी। बदहवासी में कुछ सोच भी नहीं पाया.....यह भी नहीं हुआ कि सीढियों पर चढकर अुनके सामने पहुँच जाअूँ। अेकाअेक टेलिफोन बूथ में घुसकर मैं ने अुसका दरवाजा बंद कर दिया था। अुनकी निगाह अुधर नहीं गअी थी। टेलीफोन के बूथ थे भी कोने में। वे दोनों अुतरकर हाल की ओर बढ गअे। मैं शीशे पार से जितना देख पाया था, अुतना ही मेरे लिअे काफ़ी था।.....सुमन्त, चित्रा के कन्धे पर हाथ रखे हुअे बडे मुक्त भावसे धीरे धीरे चल रहा था और चित्रा

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

हंसती हुअी अुससे कुछ कह रही थी। अुसके बाद दीवार का कोना आ गया था और वे मेरे दृष्टिपथ के पार हो गये थे।''[९]

'तीसरा आदमी' की भाषा में रुमानियत भी पायी जाती है। अुदा - ..... ''मैं ने चित्राकी कमर में हाथ डाल दिया था और चलते चलते गुदगुदी घास पर पहुँच गये थे। घास पर हम दोनों ही लेट गये थे और मैं ने अुसकी बांह पर हाथ रख लिया था· नम घास हमें धीरे धीरे असह्य लगने लगी थी और अुसकी कमर के गिर्द बांहे डालकर अधलेटा-सा हो गया था। चित्राने भरी भरी आँखों से मुझे देखा था। .....अुसका शरीर हमेशा की तरह पसीज आया था और घास की भीगी महक के साथ अुसके तन की महक चारो ओर भरी गअी थी। अुसके ओठों से जैसे रस फूटने लगा था। और ओठों तथा [redacted] कानों की किनारियों से लौ - सी निकल रही थी। मैं ने महहोशी में अुसके ओठों पर अपने ओठ रख दिये थे। किसी आहट ने हमें चौंका दिया।''[१०]

'तीसरा आदमी' में शैली लिखा गया लघु-अुपन्यास है। यह शैली अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रभावपूर्ण बन पड़ी है। अिसमें कही भी दुरुहता नहीं आ पाअी है। स्पष्टता और सफलता अुसकी अन्य विशेषताअें हैं। जैसे - ''अब मैं दिल्ली नही लौटना चाहता। नौकरी करने का भाव भी मन में अब बाकी नहीं रह गया है। नौकरी ही क्या, अब कुछ करने लायक मैं नहीं रह गया हूँ। मेरा मन टूट गया है। दिल्ली में तो अब मैं अेक दिन भी रहना बरदाश्त नहीं कर सकता। मुझसे सहा नहीं जाअेगा। ......पर मैं ने यह तय कर लिया हैं। मै यहाँ से अपना त्यागपत्र भेज दूँगा और फिर जो सामने

आअेगा, अुसे झेलूँगा।''[११] .....

मानसिक संघर्ष -

'तीसरा आदमी' अिस लघु-अुपन्यास में कालेश्वरजी ने 'मैं' का मानसिक संघर्ष प्रस्तुत किया है। अिसी संघर्ष से वह पीडित है। जैसे -

'' हर वक्त अेक तीसरी छाया मंड़राती रहती है। अैसा लगता है कि वह मेरे और चित्रा के बीच खडी है....वह छाया मुझे चित्रा के पास पहुँचने से रोकती है। जब मैं अपने ख्यालों में ही चित्रा की आँखों में झाँकने की कोशिश करता हूँ, तो लगता है, जैसे दो नहीं, चार आँखें अुसकी आँखों में झाँक रही है, चार बाहें अुसे कस रही हैं, चार ओंठ अुसे प्यार कर रहे हैं। ....मेरे आगे आगे अेक छाया हर समय चलती है और लगता है कि मैं अुस छाया का सिर्फ पीछा करता हूँ। जो वह कहती है, वही मैं करता जाता हूँ। मुझसे पहले वह घर में दाखिल होती है। मुझसे पहले वह चित्रा को देखती है.....जो कुछ मैं करना चाहता हूँ, अुससे पहले वह छाया वही सब कर देती है।''[१२]

अुद्देश्य -

पति-पत्नी के बीच जब कोअी 'तीसरा आदमी' आता है, तब अुनके आपसी रिश्ते टूट जाते है, और शक की आँधी अुनके जीवन को कैसी तबाह करती है, अिस सत्य को कमलेश्वरजी नें 'तीसरा आदमी' अिस लघु-अुपन्यास बखूबी के साथ प्रस्तुत किया है। दूसरी अेक और बात अिसमें प्रस्तुत की गयी है, वह यह कि जब कस्बे का आदमी महानगर में आता है, तब

वह कैसे टूटता जाता है अुसका भी सही चित्रांकण कमलेश्वरजी ने अिस लघु-अुपन्यास में किया है।

'मैं' और 'चित्रा' दोनों पति-पत्नी है। दोनों के बीच अेक 'तीसरा आदमी' - सुमन्त आ जाता है। अुसके आते ही मैं का शक बढते बढते आखिर पक्का बना जाता है। स्वयं चित्रा भी सुमन्त की ओर खींच जाती हैं। फ़िर फिर अनहोनी बातें घटित होती हैं। आखिर सुमन्त खुदकशी कर लेता है।

अिस लघु-अुपन्यास में कमलेश्वरजी ने 'मैं' का मानसिक संघर्ष भी प्रस्तुत किया है। घर में हमेशा अेक तीसरी छाया मंड़राती रहती है। मैं जब अपनी पत्नी की आँखों में झाँकता तो अुसको लगता कि दो नहीं चार आँखे अुसको झाँक रही है, दोनही चार बाहें अुसको कस रही हैं, और दोनों नहीं चार होंठ अुसको प्यार कर रहे है।

''स्त्री, पुरुष या पति-पत्नी के सम्बन्ध अितने कोमल आधार पर स्थिर होते है कि वे अपने बीच किसी प्रकार का अन्तर सह नहीं पाते। कभी भूल से भी यदि अिन दोनों के बीच किसी तीसरे ने प्रवेश किया है तो जीवन तल्ख हो गया है। व्यक्ति जीवन की अिसी अुलझन को कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है। 'तीसरा आदमी' के रूप में लेखक का यह लघु-अुपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर व्यक्ति चेतना के बदलते हुअे स्वरूप का अेक चित्र है।''[१२]

''तीसारा आदमी' अुपन्यास में जीवन का यथार्थ वर्तमान व सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति-चेतना के परिवर्तित

रूप को अुद्घाटित करता है। कमलेश्वर ने अिस अुपन्यास में छोटी छोटी स्थितियों के व्दारा मध्यवर्गीय जीवन की विषमताओं को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। ''[१४]

जैसे - ''घर में जूते तो सब के अलग अलग आते थे, पर चप्पलें कुछ अिस तरह खरीदी जाती थी कि जिनसे अेक दूसरे का काम भी निकल जाये। बाबू जी की चप्पल मेरे काम आ जाती थी और बहनों की चप्पले जररूरत के वक्त मां की अिज्जत रख लेती थीं, बहनों के पास साड़ियाँ भी अैसी ही थीं, जो बदल बदलकर अेक दूसरे के काम आती रहती थीं.....। ''[१५]

'तीसरा आदमी' के जिन सामाजिक, आर्थिक व्यक्तिगत परिस्थितियों के बीच सुरेश और चित्रा के संबंधों में जो कटुता आ जाती है, अुसे कमलेश्वर ने फिर से मानवीय व्यक्तित्व का रूप देने का प्रयास किया है....। ''[१६]

जैसे - 'जो कुछ भी हुआ है अुसे भूल जाओ और बच्चे को लेकर चली आओ, मेरे दिल में आज कुछ भी नहीं है। अपमान और दारूण दुःख की जिस आग में जलता रहा हूँ, अुसने अब कुछ भी शेष नहीं छोड़ा है। अब न मेरे मन घृणा है और न प्रतिशोध। कुछ भी नहीं है। चित्रा। शायद हम फिर से अपनी ज़िन्दगी शुरू कर सकें। नहीं जानता, अिस बीच तुमने क्या क्या सोचा ? पर मैं बहुत साफ़ मन से अितना ही कह सकता हूँ कि तुम्हारे चले आने के बाद सब ठीक हो जाअेगा। मेरे मन में अब कहीं भी किसी तरही की कुण्ठा नहीं है। शायद अिसलिअे भी कि मैं अुस अबोध को सिवा प्यार के और कुछ नहीं कर सकता। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा निरंतर करूँगा...। '[१७]

टिप्पणियाँ

१. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ५

२. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ८३

३. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - [illegible] ८३

४. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - [illegible]

५. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ३[illegible]

६. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - २३-२४

७. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - २५

८. कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह
कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुराड़िया
पृष्ठ -

९. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ६८

१०. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - २६

११. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ७२

१२. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ५

१३. घनश्याम मधुप - हिन्दी लघु-उपन्यास
पृष्ठ - १६९

१४. सं. मधुकर सिंह - कमलेश्वर
कृष्ण कुरंडिया - कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना
पृष्ठ - २०६

१५. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ९२

१६. सं. मधुकर सिंह - कमलेश्वर
कृष्ण कुरंडिया - कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना
पृष्ठ - २११

१७. कमलेश्वर - तीसरा आदमी
पृष्ठ - ५८

---o---

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR